2 अक्टूबर 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 13 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 19 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2012 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

नागपुर (महा.) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म और क्षमावणी विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार, दोपहर में सिद्धचक्र मण्डल विधान की जयमाला और रात्रि में क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन हुये।

दोपहर में 1.30 से 3.45 तक सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित मयंकजी जैन अमरमऊ ने पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी के सहयोग से कराये।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट की रजत जयन्ती के अवसर पर डॉ. भारिल्ल को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् डॉ. श्रेयांसजी सिघई शास्त्री (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर) द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के निर्जरा अधिकार पर प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा 'धर्म के दशलक्षण' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में महिला मण्डल एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री ने संपन्न कराये। समस्त कार्यक्रम पण्डित पीयूषजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ प्रतिदिन नित्यनियम पूजन के उपरान्त

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सुगन्ध दशमी की झांकी

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सुगन्ध दशमी के अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा सायंकाल **'सम्यग्दर्शन के अष्ट अंग'** विषय पर आधारित भव्य सजीव झांकी का आयोजन किया गया। इसमें टोडरमल महाविद्यालय के 100 छात्रों के साथ-साथ वीतराग-विज्ञान पाठशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी भाग लिया।

सभी दर्शनार्थी एक ओर तो त्रिमूर्ति जिनमंदिर की भव्यता देखकर अभिभूत थे, दूसरी ओर सम्यग्दर्शन विषय को इतने सरल तरीके से प्रस्तुत करने को लेकर भी आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर हजारों लोगों ने झांकी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

झांकी का उद्घाटन श्रीमती नीलम जैन-परितोषवर्धनजी, गौरव जैन, श्रीमती पूजा जैन जनता कॉलोनी एवं श्री राजेन्द्रजी गोधा ने किया।

इस कार्यक्रम में टोडरमल स्मारक परिवार के समस्त सदस्यों, महानगर शाखा एवं वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल का विशेष सहयोग रहा।

- संजय शास्त्री

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा 15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर आपको देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि अनेकों शीर्षस्थ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी को अपने इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भावभीना हार्दिक आमंत्रण है।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

85

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १५५

विगत गाथा में मोक्ष के स्वरूप का कथन किया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा १५५ में मोक्षमार्ग के संदर्भ में स्व समय–परसमय का स्वरूप कहते है। मूल गाथा इसप्रकार है –

जीवो सहावणियदो अणियदगुणपज्जओध परसमओ।
जदि कुणदि सगं समयं पब्भस्सदि कम्मबंधादो।।१५५।।

(हरिगीत)

स्व समय स्वयं से नियत है पर भाव अनियत पर समय।
चेतन रहे जब स्वयं में तब कर्मबंधन पर विजय।।१५५।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जीव द्रव्य स्वभाव से नियत (एकरूप) होने पर भी यदि अनियत (अनेकरूप) गुणपर्यायवाला हो तो 'परसमय' है। यदि वह नियत गुणपर्याय से परिणत होकर स्वसमय रूप करता है तो कर्मबन्ध से छूटता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि स्वसमय के ग्रहण और परसमय के त्यागपूर्वक कर्मक्षय होता है। इस गाथा में ऐसे प्रतिपादन द्वारा ऐसा दर्शाया है कि ''जीव स्वभाव में नियत चारित्र मोक्षमार्ग है।''

संसारी जीव द्रव्य अपेक्षा ज्ञान–दर्शन में स्थित (ज्ञानदर्शन वाले) होने पर भी जब अनादि मोहनीय के उदय का अनुसरण करने के कारण अशुद्ध उपयोग वाला होता है तब भावों की अनेकरूपता ग्रहण होने के कारण अनियत (अनिश्चित) के उदय का अनुसरण करनेवाली परिणति को छोड़कर अत्यन्त शुद्ध उपयोग वाला होता है, तब भाव की एकरूपता ग्रहण होने से उसे जो एकरूप (नियत) गुणपर्यायपना होता है, वह स्वसमय–स्वचारित्र है।

अब अन्त में आचार्य कहते हैं कि वास्तव में यदि जीव किसी भी प्रकार सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगट करके, परसमय को छोड़कर स्वसमय को ग्रहण करता है तो कर्मबंध से अवश्य छूटता है; इसलिए वास्तव में ऐसा निश्चित होता है कि – जीव का स्वभाव में एकरूप होना मोक्षमार्ग है।

इसी भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

जीव–सुभाव नियत सदा, अनियत गुन–परजाय।
परसमयाश्रित स्वगत तैं, कर्मबंध नसि जाय।।१९२।।

(सवैया इकतीसा)

संसारी जीवौंकै ग्यान–दृग–गुन जो पै तौ पै,
मोहिनी अनादिवस राग–दोष वसता।
तातैं नानारूप भाव गुन–परजायविषै,
परसमैरूप होइ पररूप लसता।।
सोई मोह झारि एक सुद्ध उपयोग धारि,
कालजोग पाय आपविषै आप धसता।
सुद्ध गुन–परजैमैं स्वसमय एकाकी है,
सोई मोखमारगमैं कर्मबंध नसता।।१९३।।

(दोहा)

काल–लब्धि–बल पायकैं, सम्यक् जोति–उद्योत।
पर समयाश्रित पर लसै, स्व–समय निजपद होत।।१९४।।

(सोरठा)

स्वसमय निजपद होइ, काललब्धि जो पाइये।
खेद करौ जिन कोई, वस्तु सहज परिणति लसै।।१९५।।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए कहते हैं कि यह आत्मा निश्चय से अपने शुद्ध आत्मिक भावों में निश्चल है। जिसतरह लैंडीपीपल में अव्यक्तरूप से चौसठपुटी अर्थात् शत–प्रतिशत चरपराहट (तीखास) है, किन्तु वह पीसने पर प्रगट होती है, उसीतरह आत्मा में अन्तर शक्ति रूप में सुख–शान्ति भरी हुई है; किन्तु पर की ओर झुकाव होने से उसकी शान्ति बाहर व्यक्तरूप से दिखाई नहीं देती। वह त्रिकाली स्वरूप की अपेक्षा से कही गई है। गुण–गुणी एक हैं। सब अपने स्वभाव में निश्चल हैं तथा ज्ञानादि गुणों से भरपूर हैं; किन्तु अनादि से जीव को अविद्या अर्थात् अज्ञान की वासना है। अतः अज्ञानी ऐसा मानता है कि दान देने से धर्म होता है, जबकि दान द्वारा धन की तृष्णा घटाने से पुण्य होता है। वह पुण्य भी विकार भाव होने से कर्म बंधन है, धर्म नहीं।

पुण्य–पाप दोनों विकार हैं। क्रोध–मान–माया लोभ का परिणाम १०४ डिग्री का बुखार जैसा है तथा दया–दानादि का शुभभाव ९९ डिग्री जैसा है। दोनों रोग हैं। ९९ डिग्री का बुखार अधिक दिन रहे तो क्षयरोग हो जाता है। पुण्य–पाप रहित शुद्ध स्वभाव में स्थिर होना चारित्र है।

''मैं ज्ञायक हूँ, विकार मेरा स्वरूप नहीं है'' – ऐसा न मानकर अनादि से पर में उपयोग होने से पुण्य–पाप में लीन हो रहा है। तथा अभिमान करता है कि 'मैं पर में फेर–फार कर सकता हूँ।' उससे कहते हैं कि अपनी श्रद्धा का विषय पलट और ऐसा मान कि 'मैं शरीर का या पर का कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। ऐसी श्रद्धाकर!

गुरुदेव कहते हैं कि – आत्मा का स्वभाव ज्ञानदर्शन है, उस स्वभाव में रमणता ही चारित्र है। संसारी जीव पुरुषार्थ करके आत्मिक स्वरूप में जो आचरण करते हैं, वह चारित्र है। ऐसे चारित्र का पालन करने से जीव मुक्ति प्राप्त करता है। ●

(गतांक से आगे...)

एक गेगरिन नाम की बीमारी होती है। वह बहुत तेजी से फैलती है। अत: डॉक्टर कहता है कि आपकी अंगुलि में गेगरिन है, उसे काटना होगा। आप मुझे अंगुली काटने की सहमति दीजिए।

उसकी बात सुनकर जब रोगी कहता है कि मुझे सोचने दो; क्योंकि यह अंगुली तो बहुत काम आती है। डॉक्टर कहता है – सोचने का समय नहीं है, यदि हाँ कहने में देर करोगे तो फिर हाथ काटना पड़ेगा। बात करते–करते कुछ देर हो जाती है और उसका हाथ काट दिया जाताहै।

हाथ काटने में बहुत कुछ वह अंश भी कट जाता है; जिसमें कोई खराबी नहीं थी; क्योंकि यदि उसमें बीमारी का जरा–सा भी अंश रह जाता तो वह संपूर्ण शरीर में फैल सकती थी। **अत: डॉक्टर को यह सुविधा प्राप्त है कि वह नीरोग अंग को भी काट दे; पर धर्म के डॉक्टर को यह सुविधा प्राप्त नहीं है; क्योंकि स्व–पर भेदविज्ञान में यह कहागया है कि रंचमात्र भी अपना अंश पर में या पर का अंश अपने में नहींमिलाना।**

यदि रंचमात्र भी परपदार्थ को अपना मान लिया या निज को पररूप जान लिया तो विकल्पात्मक ज्ञान भी सच्चा नहीं होगा। यदि विकल्पात्मक ज्ञान सच्चा नहीं हुआ तो निर्विकल्पक आत्मानुभूति होना संभव नहीं है।

सम्यग्दृष्टि और सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि के विकल्पात्मक आत्मज्ञान में मात्र इतना ही अन्तर होता है कि सम्यग्दृष्टि ने स्वयं प्रत्यक्ष देखकर जाना है और सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि ने प्रत्यक्ष देखनेवाले से सुनकर जाना है, उसके द्वारा लिखित पढ़कर जाना है।

प्रश्न : क्या सभी पदार्थों का ऐसा ज्ञान करना होगा ?

उत्तर : नहीं, सभी का नहीं; मात्र अपने आत्मा का। एक ओरअपना भगवान आत्मा और दूसरी ओर सारा जगत। इन दोनों के बीच ही भेदज्ञान करना है। समस्त परपदार्थों से भिन्न अपने आत्मा को जाननाहै।

आत्मा में उत्पन्न होनेवाले मोह–राग–द्वेष के भाव भी पर हैं। उनसे भी भिन्न अपने आत्मा को जानना है। वर्णादि और रागादि भावों से भिन्न निज भगवान आत्मा को जानना है। कहा भी है कि –

वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा भिन्ना भावा: सर्व एवास्य पुंस:।[१]

१. समयसार कलश ३७

यह भगवान आत्मा वर्णादि भावों और रागादि विकारों से भिन्नहीहै।

वर्णादि में सभी संयोग (परपदार्थ) आ जाते हैं और रागादि में संयोगी भाव अर्थात् आत्मा में उत्पन्न होनेवाले सभी विकारी भाव आ जाते हैं।

सद्गुरु के सदुपदेश से तत्त्वार्थ का, विशेषकर आत्मतत्त्व का आगमानुसार स्वरूप स्पष्ट हो जाने पर सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि या सम्यक्त्वी जीव सविकल्पदशा से निर्विकल्पदशा को किसप्रकार प्राप्त करते हैं – इसका स्वरूप समझाते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''वही सम्यक्त्वी कदाचित् स्वरूप ध्यान करने को उद्यमी होता है, वहाँ प्रथम भेदविज्ञान स्व–पर का करे; नोकर्म–द्रव्यकर्म–भावकर्म रहित केवल चैतन्य–चमत्कारमात्र अपना स्वरूप जाने; पश्चात् पर का भी विचार छूट जाय, केवल स्वात्मविचार ही रहता है; वहाँ अनेक प्रकार निजस्वरूप में अहंबुद्धि धरता है।

चिदानन्द हूँ, शुद्ध हूँ, सिद्ध हूँ – इत्यादिक विचार होने पर सहज ही आनन्द तरंग उठती है, रोमांच हो आता है; तत्पश्चात् ऐसा विचार तो छूट जाय, केवल चिन्मात्रस्वरूप भासने लगे; वहाँ सर्व परिणाम उस रूप में एकाग्र होकर प्रवर्तते हैं; दर्शन–ज्ञानादिक का व नय–प्रमाणादिक का भी विचार विलय हो जाता है।

चैतन्यस्वरूप जो सविकल्प से निश्चय किया था, उस ही में व्याप्य–व्यापकरूप होकर इसप्रकार प्रवर्त्तता है, जहाँ ध्याता–ध्येयपना दूर हो गया। सो ऐसी दशा का नाम निर्विकल्प अनुभव है।

बड़े नयचक्र ग्रन्थ में ऐसा ही कहा है –

तच्चाणेसणकाले समयं बुज्झेहि जुत्तिमग्गेण।
णो आराइणसमये पच्चक्खोअणुहवो जह्मा।।२६६।।

अर्थ :– तत्त्व के अवलोकन (अन्वेषण) का जो काल उसमें समय अर्थात् शुद्धात्मा को युक्ति अर्थात् नय–प्रमाण द्वारा पहले जाने। पश्चात् आराधन समय जो अनुभवकाल उसमें नय–प्रमाण नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्ष अनुभव है।

जैसे – रत्न को खरीदने में अनेक विकल्प आते हैं, जब प्रत्यक्ष उसे पहिनते हैं; तब विकल्प नहीं है, पहिनने का सुख ही है।

इसप्रकार सविकल्प के द्वारा निर्विकल्प अनुभव होता है। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन एवं विदुषी समता झांझरी उज्जैन द्वारा प्रवचन एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म के आधार से प्रवचन हुये। दोपहर में विदुषी समता झांझरी द्वारा महिला मण्डल की कक्षा ली गई। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। धूप दशमी के अवसर पर 'इन भावों का फल क्या होगा ?' विषय पर झांकी का आयोजन किया गया।

सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: गुणस्थान विषय पर एवं रात्रि में बारह भावना पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित योगेशजी शास्त्री जयपुर द्वारा बालकक्षा, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद-नवरंगपुरा (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार, दोपहर में नयचक्र एवं रात्रि में तीन लोक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन भी हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन वी.के. पटेल हॉल में किया जाता था, जिसमें लगभग 1000 साधर्मियों की उपस्थिति रहती थी।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित दीपकजी कोटिडिया के निर्देशन में सिद्धभक्ति मण्डल द्वारा कराये गये। समस्त कार्यक्रम श्री अजितभाई के निर्देशन में युवा साथियों के सहयोग से संपन्न हुये।

अनंत चतुर्दशी के दिन दोपहर में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

अहमदाबाद-सुरेन्द्रनगर (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी द्वारा प्रात: बहनश्री के वचनामृत, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में लगभग 250-300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

जयपुर (बड़ा मन्दिर) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापंथियान घीवालों का रास्ता में प्रतिदिन दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

जयपुर (मालवीय नगर-सेक्टर 7) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त सायंकाल पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। **- नथमलजी झांझरी**

जयपुर (सी-स्कीम) : यहाँ सेठी चैत्यालय में प्रतिदिन पण्डित नीतेशजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

जयपुर (राजस्थान जैनसभा) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़े दीवानजी में प्रतिदिन पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

जयपुर (प्रताप नगर-सेक्टर 17) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रतिदिन पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

जयपुर (जयजवान कॉलोनी) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रतिदिन पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

इनके अतिरिक्त जयपुर में विभिन्न स्थानों पर प्रवचनार्थ विद्वान निश्चित किये गये थे, जिनका विवरण निम्नानुसार है - 1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गायत्रीनगर में पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल, 2. श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर, चित्रकूट कॉलोनी सांगानेर में डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 3. श्री महावीर पब्लिक स्कूल सी-स्कीम में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, 4. श्री महावीर दिगम्बर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय सी-स्कीम में पण्डित अपूर्वजी शास्त्री जयपुर, 5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सिवाड़ बाकलीवाल में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, 6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सेक्टर-5 प्रतापनगर में पण्डित चिन्मयजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी, 7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर खजांची की नसियां में पण्डित सौरभजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 से 30 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
3 नवम्बर	अलीगढ	दीक्षान्त समारोह
10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127